



۲۰۱۵/۱۱/۰۷



نجيب منلی

منی

(د الکساندر پوشکین پر مضمون)

دا غمجنې شان شپې او

ستا د سترگو له بنکلا چې رخصتېرم

دا وختونه مې خوښېږي.

طبیعت په تشریفاتو خاوري کېږي

خنګل سري او طلايي جامې اغوستي

او وړمې داسې شغېږي

لکه څوک چې په ارامه سا اخلې.

لري گرزي پر اسمان يې

د څپو څادر خپورکړی،

د لمر وړانګې هم تار تار دي.

د هوا دا سړې منډې

لا له ورايه را ته گواښ کړي

چې سپين ژمی راروان دی!

**** * ****

Унылая пора! очей очарованье!
Приятна мне твоя прощальная краса
Люблю я пышное природы увяданье,
В багрец и в золото одетые леса,
В их сенях ветра шум и свежее дыханье,
И мглой волнистою покрыты небеса,
И редкий солнца луч, и первые морозы,
И отдаленные седой зимы угрозы.

